SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महिला सरपंचों की बढ़ती साक्षरता और योग्यता जमीनी स्तर पर उनके कुशल नेतृत्व की एक नई नींवः छत्तीसगढ़ सक्ती जिले के विशेष संदर्भ में

कमल प्रसाद चन्द्रा, शोधार्थी, **सर्वेश कुमार सिंह**, शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग
आई एस बी एम विश्वविद्यालय, नवापारा, कोसमी, गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors

कमल प्रसाद चन्द्रा, शोधार्थी
सर्वेश कुमार सिंह, शोध निर्देशक
E-mail : sonuchandrachandra645@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/06/2026
Revised on : 07/08/2026
Accepted on : 17/08/2026
Overall Similarity : 00% on 08/08/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Aug 8, 2026 (02:23 PM)
Matches: 0 / 2733 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

भारतीय लोकतंत्र की सबसे महत्वपूर्ण इकाई ग्राम पंचायत है जहां स्थानीय स्तर पर विकास योजनाओं का निर्माण और ग्रामीण किया जाता है। 73वें संविधान संशोधन के बाद पंचायती राज संस्था में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हुई है इसके परिणाम स्वरुप बड़ी संख्या में महिलाएं सरपंच के रूप में नेतृत्व की भूमिका निभाई। महिला सरपंचों को केवल आरक्षण के कारण चुने गए प्रतिनिधि महिला परंतु वर्तमान समय उनकी बढ़ती साक्षरता प्रशासनिक समझ तकनीकी ज्ञान और सामाजिक जागरूकता ने उनके नेतृत्व को अधिक प्रभावी बनाया है। यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ के सक्ति जिले के चार ब्लॉक डभरा, जैजैपुर, मालखरौदा एवं सक्ती ब्लॉक के महिला सरपंचों की शैक्षणिक योग्यता नेतृत्व क्षमता निर्णय लेने की प्रक्रिया तथा ग्रामीण विकास में उनकी भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षित और जागरूक महिला सरपंच ग्राम स्तर पर प्रदेश प्रशासन सामाजिक सुधार और योजनाओं को बेहतर ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

मुख्य शब्द

महिला सरपंच, साक्षरता, नेतृत्व क्षमता, पंचायती राज, ग्रामीण विकास, महिला.

परिचय

भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक सक्ति ग्राम स्तर पर निहित है। पंचायती राज व्यवस्था स्थानीय स्वशासन की आधारशिला है, जिसके माध्यम से ग्रामीण नागरिक विकास की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं। भारतीय लोकतंत्र की सफलता स्थानीय स्वशासन की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविक सफलता तभी संभव है जब समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी शासन प्रक्रिया में सुनिश्चित हो। पंचायती राज व्यवस्था ग्रामीण जनता को निर्णय लेने की सक्ति प्रदान करती है। भारतीय लोकतंत्र की रीढ पंचायती राज व्यवस्था PRI है। 73वें संविधान संशोधन 1992 के अनुच्छेद 243 डी के तहत ग्रामीण स्थानीय

स्वशासन में महिलाओं के लिए न्यूनतम 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया था जिसे अब भारत के 21 से अधिक राज्यों जैसे छत्तीसगढ़ बिहार मध्य प्रदेश राजस्थान आदि ने बढ़ाकर 50 प्रतिशत आरक्षण कर दिया है। वर्तमान में भारत के लगभग ढाई लाख 2.5 लाख पंचायत में 14.5 लाख से अधिक निर्वाचित महिला प्रतिनिधि (EDRS) सक्रिय हैं।

इस व्यवस्था ने लाखों महिलाओं को स्थानीय शासन में भागीदारी का अवसर प्रदान किया है, शुरुआती दशकों में सरपंच पति प्रोक्सी लीडरशिप की प्रथम एक गंभीर चुनौती थी, महिला सरपंचों की भूमिका केवल औपचारिक मानी जाती थी, या महिलाएं केवल कागजों पर रबर स्टैंप थी परंतु समकालीन भारत में बढ़ती साक्षरता शिक्षा का प्रसार महिला ससक्तिकरण कार्यक्रम स्वयं सहायता समूह डिजिटल साक्षरता सरकारी प्रशिक्षण एवं सामाजिक जागरूकता ने इस स्थिति में व्यापक परिवर्तन किया है। आधुनिक महिला सरपंच न केवल साक्षर है बल्कि कुशल प्रशासक के रूप में उभर रहे हैं।

वर्तमान की महिला सरपंच पहले की तुलना में अधिक शिक्षित प्रशिक्षित और तकनीकी रूप से सक्षम हैं। महिला सरपंच न केवल पंचायत प्रशासन का संचालन कर रही है सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने ग्राम सभा का संचालन करने वित्तीय अभिलेखों को समझने डिजिटल माध्यमों का उपयोग करने तथा विभिन्न विभागों में सामान्य में स्थापित करने में भी अधिक सक्षम हो चुकी है, जैसे सरकार की विभिन्न योजनाएं मनरेगा प्रधानमंत्री आवास योजना स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन तथा अन्य विकास योजनाओं का प्रभावी संचालन भी कर रहे हैं। वह ग्राम सभा को सक्रिय बनाने वित्तीय पारदर्शिता सुनिश्चित करने तथा महिलाओं बच्चों एवं वंचित वर्गो की समस्याओं को प्राथमिकता देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस प्रकार महिला सरपंचों के बढ़ती साक्षरता स्थानीय लोकतंत्र को अधिक उत्तरदाई एवं प्रभावी बना रही है।

अध्ययन का क्षेत्रः सक्ती जिला, छत्तीसगढ़

यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य का के सक्ती जिले को विशेष रूप से संदर्भित है जिनमें सक्ती जिला के 4 ब्लॉक का अध्ययन किया गया है जिसमें सक्ती, डभरा, जैजैपुर, मालखरौदा, शामिल है।

सक्ति जिला छत्तीसगढ़ राज्य का एक प्रमुख ग्रामीण जिला है यहां क्या अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, पशुपालन पर आधारित है। जिले में आने ग्राम पंचायत कर रहे थे जहां महिला प्रतिनिधि की भागीदारी लगातार बढ़ रही है शिक्षा के विस्तार, स्वयं सहायता समूह की सक्रियता, सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा डिजिटल सेवाओं की उपलब्धता ने महिला सरपंचों के कार्य क्षमता में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। यह स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार विकास योजनाओं चयन ग्राम सभा के माध्यम से निर्णय तथा विभिन्न विभागों के साथ संबंध स्थापित कर पंचायत प्रशासन को अधिक प्रभावी बना रहे हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

भारत में ग्रामीण महिलाओं की नेतृत्व भूमिका का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पंचायत स्तर पर लिए गए निर्णय सीधे आम नागरिकों के जीवन को प्रभावित करते हैं और इससे गांव की जनता सीधे प्रभावित होती है। पहले ग्रामीण राजनीति में महिलाओं की भागीदारी सीमित थी किंतु वर्तमान में शिक्षा के विस्तार सामाजिक जागरूकता सामाजिक परिवर्तन के कारण महिलाएं सक्रिय रूप से स्थानीय स्वशासन का नेतृत्व कर रही है और ग्रामीण विकास में अपना योगदान दे रही हैं।

महिला सरपंचों की बढ़ती योग्यता निम्न क्षेत्र में प्रभाव डाल रही हैः

1. प्रशासनिक कार्यों की बेहतर समझ।
2. सरकारी योजनाओं का प्रभावित क्रियान्वयन।
3. ग्राम सभा में सक्रिय भागीदारी।
4. महिलाओं एवं कमजोर वर्गों की समस्याओं का समाधान।
5. पारदर्शी और जवाबदेही पंचायत व्यवस्था का निर्माण।
6. पंचायत स्तर पर महिला नेतृत्व की प्रभावशीलता का मूल्यांकन।
7. नीति निर्माण में महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए उपयोगी सुझाव।
8. ग्रामीण विकास योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण।
9. महिला ससक्तिकरण एवं लोकतांत्रिक भागीदारी को प्रोत्साहन।
10. भविष्य के सुधार्थियों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी।

साहित्य समीक्षा

1. के. बिना अग्रवाल 2001 ने बताया है कि महिलाओं की प्रभावी भागीदारी तभी संभव है जब उन्हें शिक्षा एवं निर्णय लेने का वास्तविक अधिकार प्राप्त हो।
2. निर्मल पूछ के अध्ययन में पाया गया है कि पंचायत में महिलाओं की भागीदारी से सामाजिक विकास को गति मिली किंतु प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक जानकारी की आवश्यकता बनी रही।
3. जॉर्ज मिथुन ने स्थानीय स्वशासन को लोकतंत्र की आधारशिला बताते हुए महिला नेतृत्व को ग्रामीण परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम माना।
4. भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय के विभिन्न रिपोर्ट से स्पष्ट किया गया है कि शिक्षित महिला प्रतिनिधि योजनाओं की निगरानी वित्तीय प्रबंधन तथा जनसुनवाई में अधिक प्रभावित भूमिका निभाती है।

साहित्य समीक्षा से शोध अंतर

अधिकांश अध्ययन राष्ट्रीय स्तर पर केंद्रित हैं महिला सरपंचों की बढ़ती शिक्षा डिजिटल साक्षरता तथा नेतृत्व क्षमता के समकालीन प्रभाव का विस्तृत अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है यही यह सूत्र का प्रमुख आधार है।

शोध की पद्धति

यह सब मुख्य रूप से वर्णनात्मक एवं विशेषणानात्मक पद्धति पर आधारित है।

अध्ययन के स्रोत

द्वितीय आंकड़े, सरकारी रिपोर्ट पंचायती राज मंत्रालय के प्रकाशन, शोक पत्र एवं पुस्तक, जनगणना आंकड़े, नीति आयोग एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय की रिपोर्टिंग, ग्रामीण विकास संबंधी सामग्री उपयोग किया गया है।

महिला सरपंचों की बढ़ती साक्षरता का प्रभाव /परिणाम

1. शिक्षा से बढ़ती प्रशासनिक क्षमता

पिछले वर्षों में महिलाओं की शिक्षा में निरंतर वृद्धि हुई है उच्च माध्यमिक स्नातक तथा स्नातकोत्तर शिक्षित महिलाओं की संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी है। महिला सरपंच पंचायत के नियमों सरकारी योजनाओं और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अधिक आसानी से समझ पाती हैं। इससे महिला सरपंचों में निम्नलिखित परिवर्तन आए हैं।

1. प्रशासनिक कार्यों की बेहतर समझ।
2. सरकारी योजनाओं को पढ़ने एवं समझने की क्षमता।
3. योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन।
4. वित्तीय पारदर्शिता में वृद्धि।
5. डिजिटल तकनीक का बेहतर उपयोग।
6. ग्राम सभा में आत्मविश्वास व सहभागिता।
7. विभागीय अधिकारियों के साथ प्रभावी संवाद।

2. निर्णायक महिला सरपंच नेतृत्व करने की क्षमता

शिक्षित महिला सरपंचों ने गांव की दशा और दिशा निर्णय लेने की क्षमता को बहुत अत्यधिक प्रभावित किया है। साक्षरता ने महिला सरपंचों की आत्मविश्वास प्रदान किया है। अब महिला सरपंच केवल सलाह देने वाली प्रतिदिन नहीं रह गई है बल्कि स्वयं निर्णय लेने वाली योजनाओं की प्राथमिकता तय करने में सक्षम हो रही है।

1. गांव की प्राथमिक समस्या का समाधान क्षमता।
2. तार्किक निर्णय लेने की योग्यता नेतृत्व कौशल।
3. प्रशासनिक दक्षता।
4. अधिकारियों से संवाद समन्वय।
5. ग्रामीण योजना के क्रियान्वन के लिए समय प्रबंधन।
6. सामाजिक संवेदनशीलता।
7. समूह निर्माण की क्षमता।
8. वित्तीय अनुशासन।

3. डिजिटल ज्ञान और तकनीकी दक्षता

वर्तमान समय में पंचायत कार्यों में डिजिटल माध्यमों का उपयोग बढ़ा है। शिक्षित महिला सरपंच उन्नाव की जानकारी प्राप्त करने डिजिटल भुगतान व्यवस्था समझने और सरकारी पोर्टल का उपयोग करने में सक्षम हो रही है।

डिजिटल गवर्नेंस, एक ग्राम स्वराज पोर्टल, मेरी पंचायत ऐप और जिओ टेकिंग जैसी तकनीकी प्रणालियों का आज की युवा और शिक्षित महिला सरपंच आसानी से संचालित कर रहे हैं एवं ऑनलाइन भुगतान और डिजिटल हस्ताक्षर के उपयोग से भ्रष्टाचार पर रोक लगाई गई है।

महिला सरपंचों का जमीनी स्तर पर कुशल नेतृत्व और ग्रामीण विकास का प्रभाव डाटा और विश्लेषण

विकास सूचकांक	महिला नेतृत्व का दृष्टिकोण	सकारात्मक प्रभाव
शिक्षा एवं बाल विकास	प्राथमिक शिक्षा और बालिकाओं के नामांकन पर विशेष ध्यान दिया गया है। नवीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खोला गया।	स्कूलों में ड्रॉपआऊट दर में कमी बालिका नामांकन में वृद्धि आंगनबाड़ी केंद्रों का सुधारीकरण, बालिकाओं की उच्च शिक्षा दर में वृद्धि।
जल और स्वच्छता	पेयजल की उपलब्ध उपलब्धता टीकाकरण अभियान पोषण कार्यक्रम मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार स्वच्छता अभियान हर घर शौचालय का निर्माण कूड़ेदान का निर्माण ओडीएफ ग्राम का निर्माण	हर घर नल से जल योजना का सफल करवाई और कचरे का निष्पादन स्वास्थ्य स्तर में सुधार ।
आर्थिक सुदृढ़ीकरण	स्वयं सहायता समूह का एकीकरण स्व सहायता समूह को प्रोत्साहन।	लखपति दीदी जैसी योजनाओं से महिलाओं को कुटीर उद्योग से जोड़ना और आत्मनिर्भर बनाना।
सामाजिक विकास	बाल विवाह रोकने के प्रयास महिला हिंसा के विरुद्ध जागरूकता नशा मुक्ति अभियान स्व सहायता समूह को प्रोत्साहन।	महिला सशक्तिकरण पारिवारिक शांति स्वस्थ जागरूकता आर्थिक स्वालंबन आत्मनिर्भर गांव।
डिजिटल साक्षरता की भूमिका	ऑनलाइन योजनाओं की निगरानी, डिजिटल भुगतान ई गवर्नेंस ऑनलाइन शिकायत निवारण, वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से प्रशिक्षण, मोबाइल ऐप के माध्यम से विकास कार्यों की निगरानी, गांव में किओस्क बैंकिंग की सुविधा	पंचायत में वित्तीय पारदर्शिता बड़ी है पंचायत प्रशासन में भ्रष्टाचार की संभावना कम होती है
सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन।	महिला सरपंच की जागरूकता से प्रधानमंत्री आवास योजना मंत्री का जल जीवन मिशन स्वच्छ भारत मिशन और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ ग्रामीण तक पहुंचने में सहायता मिलती है।	महिला सरपंच अधिक संवेदनशील होती हैं और पात्र व्यक्ति को बिना भ्रष्टाचार किया उनके सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करवाती है।
ग्रामीण हाट बाजार लगवाना पारंपरिक तीज त्यौहार मेले को प्राथमिकता को प्राथमिकता	ग्रामीण कृषि उपज को नगद फसल के उपज में बेचने के लिए गांव में हाट बाजार लगाया जाता है। गांव में उत्सव के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।	ग्रामीणों को आर्थिक लाभ पारंपरिक तीज त्यौहार परंपरा को संरक्षण प्रदान करना।
रूढ़िवादिता का अंत	समाज में रूढ़िवादिता जैसे छुआछूत, जाति-पाति, जादू-टोना समाप्ति की कगार पर है।	समाज में शिक्षा के प्रसार के कारण मानवता में वृद्धि हुई है।
लिंग भेदभाव की समाप्ति	पंचायती राज में महिला प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ने से लिंग भेदभाव की समाप्ति हुई है।	ग्रामीण अंचलों में महिला प्रतिनिधि यो के चयन से वह साक्षरता प्रतिशत से लिंग भेदभाव की समाप्ति हो रही है।

तालिका 1: पुरुषः अनुपात महिला सरपंचों की संख्या

क्रमांक	ब्लॉक	पुरुष सरपंच	महिला सरपंच	सरपंचों की कुल संख्या	महिला सरपंचों की प्रतिशत
01	सक्ती	33	40	73	54.79
02	डभरा	39	51	90	56.67
03	मालखरौदा	40	41	81	50.62
04	जैजैपुर	37	41	78	52.56

*(**स्त्रोतः** सक्ती जिले की स्थानीय स्वशासन जनपद कार्यालयों की रिपोर्ट)*

दंड आरेख 1: पुरुषः अनुपात महिला सरपंचों की संख्या

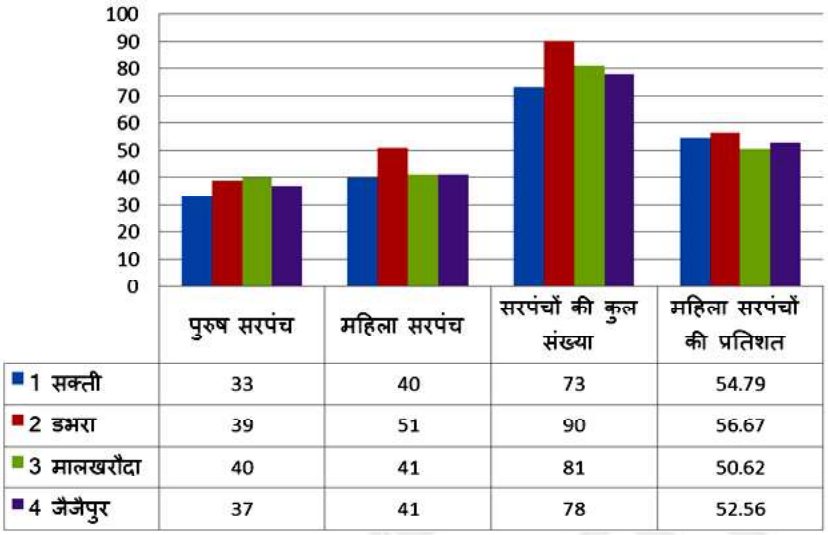

तालिका 2: महिला सरपंचों का साक्षरता प्रतिशत ब्लॉक वार

ब्लॉक	महिला सरपंचों की संख्या	प्राथमिक शिक्षा उत्तीर्ण की साक्षरता प्रतिशत	माध्यमिक शिक्षा उत्तीर्ण की साक्षरता प्रतिशत	उच्च शिक्षा उत्तीर्ण की साक्षरता प्रतिशत
सक्ती	40	27.50	52.50	20
डभरा	51	25.49	54.90	19.61
मालखरौदा	41	26.83	51.22	17.07
जैजैपुर	41	29.27	56.10	14.63

*(**स्त्रोतः** सक्ती जिले की स्थानीय स्वशासन जनपद कार्यालयों की रिपोर्ट)*

दंड आरेख 2: महिला सरपंचों का साक्षरता प्रतिशत ब्लॉक वार

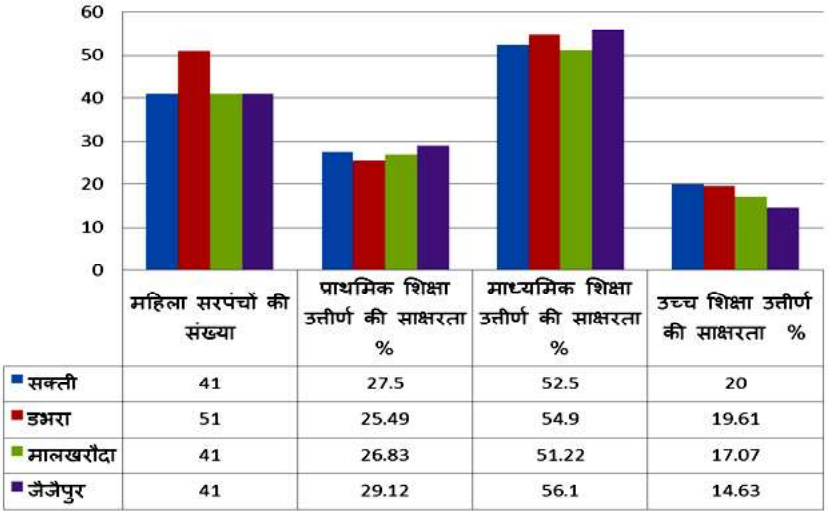

समकालीन चुनौतियां

महिला सरपंचों की भर्ती साक्षरता ने ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में सकारात्मक बदलाव के बाद भी जमीनी स्तर पर कुछ समस्यायें अभी भी मौजूद हैं।

1. **सामाजिक रूढ़ियॉ**: समाज में आज भी सामाजिक असमानता लिंग भेद और पुरुष प्रधान समाज रूढ़िवादी है जो महिला सरपंचों की कार्यों में बाधक बनते हैं।
2. **पारिवारिक का अनावश्यक हस्तक्षेप**: वर्तमान की शिक्षित महिला सरपंच नई पीढ़ी की बहुएं हैं जिसमें परिवार में बहू का घर से बाहर निकलना मन ही है यह भी ग्रामीण अंचल में शिक्षित महिला सरपंचों के लिए पारिवारिक अनावश्यक हस्तक्षेप है।
3. **सीमित वित्तीय संसाधन**: केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के द्वारा ग्रामीण विकास योजना में पूर्ण सीमित संसाधन प्राप्त न होने से महिलाएं अपना विकास कार्य करने में असफल सिद्ध होती हैं यह भी एक बाधक है।
4. **तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव**: महिला सरपंच शिक्षा का स्तर साक्षरता प्रतिशत बढ़ा है किंतु वर्तमान आधुनिक युग में तकनीकी ज्ञान की कमी है।
5. **प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जटिलता**: प्रशासन की विभिन्न योजनाओं का संचालन करने में योजनाओं को कई प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। योजना का सफल संचालन करना कुछ हद तक चुनौती है।
6. **कुछ क्षेत्र में डिजिटल सुविधाओं की कमी**: आधुनिकीकरण के इस युग में जहां सारा काम ऑनलाइन माध्यम से किया जा रहा है कुछ क्षेत्रों में नेटवर्क प्रॉब्लम या बुनियादी सुविधाएं न होने के कारण डिजिटल सुविधाओं का उपयोग महिला सरपंच द्वारा नहीं किया जा सकता यह भी एक समस्या है।
7. **समय–समय पर राजनीतिक दबाव पंचायत कार्यों में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता**: स्थानीय स्वशासन में महिला सरपंचों पर भी राजनीतिक दबाव पंचायत के कार्यों में बाधा पहुंचाते हैं जैसा की सरपंच के प्रति अविश्वास प्रस्ताव या महिला सरपंच का समर्थन न करना, विकास कार्यों में बाधा यह भी एक बड़ी एक बड़ी समस्या है।

समस्याओं का समाधान एवं सुझाव

1. **महिला जनप्रतिनिधियों के लिए नियमित प्रशिक्षण**: पंचायती राज मंत्रालय द्वारा नवनिर्वाचित महिलाओं के लिए निरंतर प्रशासनिक और डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण शिविर चलाई जाने चाहिए जिससे नवनिर्वाचित महिला सरपंच अपना पंचायती राज प्रशासनिक कार्य करने में ग्रामीण विकास करने में अपना सत प्रतिशत योगदान दे सकें।
2. **डिजिटल एवं वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम**: आधुनिक उपकरण मोबाइल इंटरनेट एवं ग्रामीण स्थानीय स्वशासन के विभिन्न योजनाओं को संचालन करने के लिए किया जा रहे आधुनिक उपकरण, एवं बैंक इंग सुविधा ऑन का कार्यक्रम चलाना चाहिए।
3. **पंचायत स्तर पर तकनीकी सहायता केंद्र**: ग्रामीणों में अधिकांशत महिलाएं साक्षर होती हैं परंतु तकनीकी एवं उच्च शिक्षा का अभाव होता है। तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के लिए पंचायत स्तर पर सरकार की तरफ से तकनीकी सहायता केंद्र खोले जाने चाहिए।
4. **महिला नेतृत्व विकास कार्यशालाएं**: नाव निर्वाचित महिला सरपंचों के लिए महिला नैतिक व विकास कार्यशाला आयोजित किया जाना चाहिए।
5. **ग्राम सभा में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना**: ग्राम सभा की बैठकों में ग्राम की सभी महिलाओं को सक्रिय रूप से बैठक में भाग लेना चाहिए जिससे ग्राम की महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का प्रचार होगा और भविष्य के लिए आने वाली भावी साक्षर जागरूक महिला प्रतिनिधि को मत् रखे जा सकते है। महिला प्रतिनिधि और अधिक साक्षर एवं ग्राम विकास कार्यों में अपना योगदान अच्छे से दे पाएंगे कार्यों में।
6. **पारदर्शी प्रशासन और सामाजिक अंकेक्षण को बढ़ावा देना**: गांव में हो रहे विकास कार्यों के और विभिन्न योजनाओं का संचालन में पारदर्शिता सामाजिक का अंकेक्षण रखना चाहिए जिससे भ्रष्टाचार की समस्या कम किया जा सके।
7. **सफल महिला सरपंचों के अनुभव का साझा मंच विकसित करना**: सफल महिला सरपंचों का नेटवर्क जिला स्तर पर महिला सरपंचों के मंच बनाए जाए ताकि वह एक दूसरे के सफल प्रयोग से सीख सकें।

8. **संस्थागत सुरक्षा कवचः** ब्लॉक स्तर पर महिला सरपंचों की शिकायतों के निवारण के लिए एक समर्पित टेस्ट होनी चाहिए जिससे वह बिना किसी पुरुष दबाव के स्वतंत्र काम कर सके और अपनी समस्याओं का समाधान कर सके।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिला सरपंचों की बढ़ती साक्षरता एवं शैक्षणिक योग्यता ग्रामीण शासन के गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। शिक्षित महिला नेतृत्व योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन, वित्तीय पारदर्शिता, सामाजिक न्याय तथा महिला ससक्तिकरण तथा जन सहभागिता को समावेशी विकास को गति दे है। अतः आवश्यक है कि महिला जनप्रतिनिधियों के लिए नियमित प्रशिक्षण डिजिटल शिक्षा नेतृत्व विकास प्रशासनिक संयुक्त तथा संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। इसमे स्थानीय लोकतंत्र और अधिक सशस्त्र होगा तथा ग्रामीण विकास के लक्ष्य अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकेंगे।

संदर्भ सूची

1. भारत का संविधान, 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992।
2. पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार वार्षिक प्रतिवेदन।
3. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
4. जनगणना भारत (2011) साक्षरता संबंधी आँकड़े।
5. Agrawal, Been (2001) *Participatory Exclusions and Womens Participation.* Elsevier Science Ltd., Oxford.
6. Bhattacharya, G. (2013) *Panchayati Raj: Women Participation and Rural Development.* Navyug Books International, New Delhi.
7. Buch, Nirmala (2000) *Women in Panchayati Raj Institutions.* Centre for Womens Development Studies (CWDS), New Delhi.
8. Mathew, George (1994) *Panchayati Raj in India.* Concept Publishing Company Pvt. Ltd., New Delhi.
9. Singla, P. (2007) *Womens Participation in Panchayati Raj: Nature and Effectiveness*. Rawat Publications, New Delhi.
10. Thakur, M. (2010) *Women Empowerment through Panchayati Raj Institutions.* Concept Publishing Company, New Delhi.

****